DefSAT 2025 Conference के उद्घाटन समारोह में माननीय राज्यपाल महोदय का उद्बोधन

(दिनांकः 09 जनवरी, 2025)

जय हिन्द!

आदरणीय मंचासीन अतिथिगण, प्रख्यात रक्षा विशेषज्ञों, उद्योग जगत के अग्रणी सदस्य, शिक्षाविद, और यहाँ उपस्थित सभी प्रतिभागी,

मुझे इस महत्वपूर्ण अवसर पर आप सभी को संबोधित करते हुए गर्व और प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह आयोजन रक्षा और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के संगम का प्रतीक है, और साथ ही हमारे देश की सुरक्षा और आत्मनिर्भरता की दिशा में उठाए गए एक बड़े कदम का उदाहरण है। यह केवल एक संगोष्ठी नहीं, बल्कि भारत के भविष्य की रक्षा और अंतरिक्ष रणनीतियों की आधारशिला है।

साथियों,

हमारा 'विकसित भारत 2047' का दृष्टिकोण हमें न केवल आत्मनिर्भरता की ओर ले जाता है, बल्कि यह सुनिश्चित करता है कि भारत वैश्विक मंच पर अपनी अग्रणी भूमिका निभाएं। आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत 'मेक इन इंडिया' और 'डिजिटल इंडिया' जैसे अभियानों ने रक्षा क्षेत्र और अंतरिक्ष विज्ञान में नए आयाम स्थापित किए हैं।

अंतरिक्ष और रक्षा प्रौद्योगिकी को हमारे सामरिक और आर्थिक विकास का अभिन्न हिस्सा हैं। आधुनिक तकनीकी विकास और स्वदेशी प्रयास ही वे आधार हैं, जिनसे हम वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बन सकते हैं।

भारत ने 'स्पेस डिप्लोमेसी' को अपनी विदेश नीति का हिस्सा बनाया है। हमने कई देशों के साथ तकनीकी सहयोग और मिशन साझेदारी स्थापित की है। भारत की यह पहल न केवल हमारे तकनीकी प्रभुत्व को प्रदर्शित करती है, बल्कि यह वैश्विक स्थिरता और सहयोग का संदेश भी देती है।

हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारी प्रौद्योगिकीय और सामरिक क्षमताएँ केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित न रहें, बल्कि वैश्विक स्थिरता और शांति के लिए भी योगदान दें। यहदृष्टिकोण भारत को 21वीं सदी का एक अग्रणी राष्ट्र बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

साथियों,

एक सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी के रूप में, मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि भारतीय सेना ने स्वदेशी तकनीकों और नवाचारों में अद्वितीय योगदान दिया है। उन्नत टैंक, मिसाइल प्रणाली और रक्षा उपकरणों का निर्माण न केवल हमारी सीमाओं की सुरक्षा को सुदृढ़ करता है, बल्कि यह हमारी आत्मनिर्भरता का भी परिचायक है। DRDO और HAL जैसे संस्थानों के माध्यम से भारतीय सेना ने

स्वदेशी तकनीकों को अपनाकर हमारे सामरिक क्षमताओं को विस्तृत किया है।

मुझे यह कहते हुए बहुत गर्व होता है कि 'तेजस' जैसे स्वदेशी लड़ाकू विमान और 'अग्नि' और 'पृथ्वी' जैसी मिसाइलें भारत के आत्मनिर्भर रक्षा ढांचे का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन परियोजनाओं के माध्यम से भारतीय सेना ने दिखाया है कि देश के संसाधनों और विशेषज्ञता का सही उपयोग करके, हम विश्व स्तर पर किसी से पीछे नहीं हैं।

साथियों,

भारत की बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय भूमिका और वैश्विक नेतृत्व की आकांक्षा, हमारे रक्षा और अंतरिक्ष कार्यक्रमों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। भारत आज उन कुछ चुनिंदा देशों में से एक है जो अंतरिक्ष में अपनी क्षमता को निरंतर विस्तार दे रहा है। चंद्रयान–3 और आदित्य–L1 जैसे मिशन ने हमारी वैज्ञानिक क्षमता को सुदृढ़ किया है और यह साबित किया है कि भारत अंतरिक्ष क्षेत्र में एक वैश्विक लीडर बनने की क्षमता रखता है।

साथ ही, मैं आज इस मंच के माध्यम से, स्पेस में भारत का सफल प्रतिनिधित्व कर रहे हमारे संस्थान, इसरो (ISRO) के सभी वैज्ञानिकों को भी अपना धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा। इसरो ने न केवल भारत को एक मजबूत अंतरिक्ष शक्ति बनाया है, बल्कि यह हमारी रक्षा

क्षमताओं को भी नए आयाम प्रदान किए हैं। चंद्रयान–3 और आदित्य–L1 जैसे मिशनों ने हमारी वैज्ञानिक क्षमता को प्रदर्शित किया और विश्व मंच पर भारत की स्थिति को सुदृढ़ किया। इन सफल मिशनों के साथ, गगनयान जैसे मानव अंतरिक्ष मिशन, स्पेस मिशन के क्षेत्र में हमारी संभावनाओं को और आगे ले जाते हैं।

इसरो की दीर्घकालिक योजनाएँ, जैसे उपग्रह प्रक्षेपण और अंतरग्रहीय मिशन, हमें न केवल तकनीकी रूप से सक्षम बनाती हैं, बल्कि यह हमारे आर्थिक विकास का भी अभिन्न हिस्सा हैं। अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में भारत का योगदान आने वाले वर्षों में और बढ़ेगा। मुझे यह कहते हुए गर्व होता है कि यह सब कुछ 'स्पेस फॉर ऑल' नीति के अंतर्गत संभव हुआ है।

साथियों,

मेरा मानना है कि इस समय की सबसे बड़ी जरूरत, रक्षा और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों का समावेशी दृष्टिकोण अपनाना है। यह दृष्टिकोण केवल प्रौद्योगिकियों का मेल नहीं है, बल्कि हमारी रणनीतियों, सुरक्षा आवश्यकताओं, और आर्थिक उन्नति का अभिन्न हिस्सा बनता है। आज के युग में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी न केवल सीमाओं की सुरक्षा करती है, बल्कि यह नई संभावनाओं के द्वार खोलती है। अंतरिक्ष और रक्षा प्रौद्योगिकी का यह संगम न केवल हमारी सुरक्षा को सुदृढ़ करता है, बल्कि यह हमें वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनाता है। आज, जब

हम मल्टी–डोमेन ऑपरेशन्स की बात करते हैं, तो यह समझना आवश्यक है कि अंतरिक्ष तकनीक और रक्षा क्षमताओं का एकीकरण कितना महत्वपूर्ण है।

'इंटीग्रेटेड स्पेस कैपेबिलिटीज' के माध्यम से, हम न केवल अंतरिक्ष से जुड़ी चुनौतियों का सामना कर सकते हैं, बल्कि हम अपनी रक्षा क्षमताओं को भी व्यापक बना सकते हैं। नॉन–काइनेटिक स्पेस वॉरफेयर, इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर, और एंटी–स्पूफिंग तकनीकों में विशेषज्ञता हमें संभावित खतरों से निपटने में सक्षम बनाती है।

साथियों,

भारत ने स्वदेशी मिसाइल रक्षा प्रणाली, उन्नत उपग्रह तकनीक, और एंटी–सैटेलाइट वेपन जैसे अभियानों के माध्यम से यह साबित किया है कि हम रक्षा और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकते हैं। यह दृष्टिकोण एकजुटता, नवाचार और वैश्विक सहयोग के माध्यम से संभव होता है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि यह समावेशी दृष्टिकोण न केवल तकनीकी विकास, बल्कि नीति निर्माण और सामरिक योजना में भी प्रतिबिंबित हो। आर्थिक विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा का संतुलन बनाना हमारे समय की एक महत्वपूर्ण चुनौती है। भारत, जो तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्था है, को यह सुनिश्चित करना होगा कि सुरक्षा और विकास एक साथ आगे बढ़ें।

साथियों,

मैं आप सबके मध्य उत्तराखण्ड का भी प्रतिनिधित्व कर रहा हूँ, हमारा राज्य जो देवभूमि के रूप में जाना जाता है, नवाचार और दृढ़ संकल्प का भी प्रतीक है। हमारे युवा और संस्थान, एयरोस्पेस, साइबर सुरक्षा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि उत्तराखण्ड ने हमेशा देश की रक्षा और विकास में अपनी भूमिका निभाई है। यहाँ के प्रतिभावान युवा हमारी सामरिक क्षमताओं को मजबूत कर रहे हैं।

साथियों,

आज हमें यह समझना होगा कि आत्मनिर्भरता और नवाचार के लिए सरकारी और निजी क्षेत्रों के बीच एक सुदृढ़ साझेदारी की आवश्यकता है। यह साझेदारी न केवल नए समाधान प्रस्तुत करेगी, बल्कि यह हमारी आर्थिक और सामरिक स्थिति को भी मजबूत करेगी। अंतरिक्ष न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी का क्षेत्र है, बल्कि यह हमारी आस्था और अस्तित्व का भी हिस्सा है। भारत ने अपनी प्राचीन परंपराओं में भी आकाश और ब्रह्मांड को विशेष महत्व दिया है। यह ''कॉस्मिक कनेक्शन'' हमें यह सिखाता है कि हमारी जिम्मेदारी केवल पृथ्वी तक सीमित नहीं है, बल्कि ब्रह्मांड के प्रति भी है।

अंतरिक्ष में हमारी उपस्थिति यह सुनिश्चित करेगी कि हम केवल तकनीकी रूप से सक्षम ही न बनें, बल्कि हम एक सुरक्षित और सहयोगात्मक वैश्विक वातावरण का निर्माण करें। आर्थिक विकास और राष्ट्रीय सुरक्षा का संतुलन बनाना हमारे समय की एक महत्वपूर्ण चुनौती है। भारत, जो तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्था है, को यह सुनिश्चित करना होगा कि सुरक्षा और विकास एक साथ आगे बढ़ें।

हमारे रक्षा और अंतरिक्ष कार्यक्रम न केवल हमारी सुरक्षा को मजबूत करते हैं, बल्कि वे आर्थिक विकास के इंजन भी हैं। अंतरिक्ष क्षेत्र में छोटे और मध्यम उद्योगों की भागीदारी, स्टार्टअप्स का उदय, और स्वदेशी निर्माण ने हमें आत्मनिर्भर बनने में मदद की है। उदाहरण के लिए, इसरो के उपग्रह प्रक्षेपण कार्यक्रम और चंद्रयान जैसी परियोजनाओं ने न केवल वैज्ञानिक क्षेत्र में बल्कि आर्थिक क्षेत्र में भी नए आयाम जोड़े हैं। रक्षा क्षेत्र में 'मेक इन इंडिया' के तहत स्वदेशी उत्पादन ने हमारी विदेशी निर्भरता को कम किया है और रोजगार के अवसर बढ़ाए हैं। यह संतुलन केवल एक रणनीति नहीं है, बल्कि यह भारत के भविष्य की स्थिरता और प्रगति की नींव है।

अंत में, मैं DefSAT 2025 के आयोजकों और इस मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों को बधाई देना चाहूँगा। आप सभी का प्रयास न केवल हमारे देश की रक्षा और अंतरिक्ष क्षमताओं को मजबूत कर रहा है, बल्कि

एक उज्ज्वल और सुरक्षित भविष्य की नींव भी रख रहा है।

आइए, हम सभी मिलकर एक सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाएँ।

धन्यवाद।

जय हिन्द!